सूर्य से भी लाखों गुना अधिक तेजोमय

बाबा मुक्तानन्द के एक प्रवचन से एक अंश

यदि हम बाह्य जगत में ही घूमते रहते हैं तो अन्त में हमें थकान ही मिलती है; लेकिन एक बार जब हम अन्तरंग में गोता लगा लेते हैं तो हम उत्साह के स्रोत को पा लेते हैं और स्फूर्ति से पुनः भर जाते हैं। अतः, यह महत्त्वपूर्ण है कि हम अपनी अन्तरतम वास्तविकता की ओर मुड़ें जिसे हम अन्तरात्मा कहते हैं, सच्ची आत्मा कहते हैं, क्योंकि 'वह' पूर्ण है, स्वतःस्फूर्त और स्वप्रकाशमय है। अन्तरात्मा का अस्तित्व उतना ही सत्य है जितना कि पृथ्वी का अस्तित्व है। शास्त्रों में इसी अन्तर-सत्य का वर्णन अन्तर-शक्ति या दिव्य शक्ति के रूप में किया गया है। योगीजन इसे कुण्डलिनी कहते हैं। वैसे तो यह शक्ति नख से शिखा तक पूरे शरीर में व्याप्त है, परन्तु इसका केन्द्र घनीभूत रूप में मूलाधार में विद्यमान है। शैवमत का एक सूत्र कहता है, "मध्य नाड़ी का विकास होने से तुम परम आनन्द में निमग्न हो जाओगे।" और तुम इसमें हर समय निमग्न रहोगे, अभी, इसी समय। यदि तुम अन्तर्मुख हो जाओ और तुम्हारी अन्तर-शक्ति जाग्रत हो जाए और यदि तुम अपनी ही वास्तविकता को देखो तो तुम पाओगे कि तुममें अनन्त महानता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

Darshan पत्रिका, १९९०, संख्या. ४१, पृष्ठ ५४।

©२०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।